भारत के देवी-देवता

शिरडी के साईं बाबा



शिरडी के साईंबाबा



डायमंड बुक्स

eISBN: 978-93-5261-026-6
© लेखकाधीन
प्रकाशक: डायमंड पॉकेट बुक्स (प्रा.) लि.
X-30 ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, फेज-II
नई दिल्ली-110020
फोन: 011-40712100, 41611861
फैक्स: 011-41611866
ई-मेल: ebooks@dpb.in
वेबसाइट: www.diamondbook.in
संस्करण: 2016
शिरडी के साईंबाबा
लेखक: ओ.पी.झा

विषय सूची

शिरडी के साईंबाबा

बचपन

सन् 1854 का वाक्या है। 16 वर्ष का एक लड़का शिरडी में एक नीम के पेड़ के नीचे समाधि में बैठा था। जहां वह लड़का समाधि लगा रहा था, उस जगह को अब शिरडी के साईं मंदिर में 'गुरुस्थान' कहा जाता है। इससे पहले शिरडी की एक वृद्ध महिला नाना चोपदार की मां ने उसे देखा था।

कालांतर में वही बालक शिरडी के साईं बाबा या शिरडी साईं बाबा के नाम से मशहूर हुआ। सन् 1854 के पूर्व साईं बाबा के बारे में कोई प्रामाणिक सूचना नहीं मिलती। पहले की जो भी सूचना उपलब्ध है वह मनगढंत प्रयास ही लगता है। बाबा ने स्पष्ट शब्दों में किसी को भी अपना जन्म स्थान, धर्म या जाति नहीं बताई थी।

सन् 1856 में शिरडी पूर्व निजाम रियासत के अहमदनगर देश एक छोटा-सा ग्राम था। अब यह इलाका महाराष्ट्र में आता है। यह कोपर गांव रेलवे स्टेशन से मात्र 15 कि.मी. दूर है।



बचपन में बालक शिरडी नीम के पेड़ नीचे बैठे हुए।

उनका अचानक गायब हो जाना

शुरू में साईं बाबा का गांव वालों से कोई मेल-मिलाप नहीं होता था। पर वहां एक बड़ी धार्मिक स्वभाव की एक महिला थी- न्याजा बाई, जिनके मन में इस युवा योगी के लिए बड़ी श्रृद्धा थी। वही उनकी खाने आदि की चिंता करती थी और देती भी थी। बाबा

उन्हें 'मां' कहने लगे थे। पर इस युवा योगी को न कभी अपने भोजन की चिंता थी, न कपड़ों की, न ही आवास की। ज्यादातर समय वह समाधि में ही रहता था। वह उसी नीम के पेड़ के निकट एक टीन के ढांचे में बैठा रहता था जिसे 'तकिया' कहा जाता था। अन्य रमते योगीगण भी प्रायः उसी तकिया पर रात गुजारते थे। पर इस पर वह शिरडी में तीन वर्ष से ज्यादा नहीं रहे। सन् 1857 में एक दिन वह अचानक वहां से गायब हो गए।

उनके अचानक गायब होने से न्याजा बाई के अलावा एक अन्य धार्मिक व्यक्ति कहाल रूपाती भी बहुत दुखी हुए। पर एक साल तक उसका कोई पता नहीं चला।



साईं बाबा को भोजन देती न्याजा बाई।

चण्ड पाटिल से मुलाकात

चण्ड पाटिल तब धूप खेरा नामक गांव के प्रधान थे। यह गांव महाराष्ट्र के औरंगाबाद जिले में था और 14 कि.मी. दूर था। चण्डपाटिल के पास एक घोड़ी भी थी। एक दिन वह रास्ते में बहुत थक गए और विश्राम करना चाहा। यात्रा की तलाश में वह चारों तरफ घूमने लगा।

उन्होंने अपनी घोड़ी को एक पेड़ की छांव में बांध दिया था। पर जब वह वापस आए तो घोड़ी वहां नहीं थी। वह अपनी घोड़ी को आस-पास के इलाके में 2 महीनों तक तलाश करते रहे पर वह नहीं मिली। वे बेहद हताश हो चले थे- तभी उन्होंने एक आम के पेड़ के नीचे बैठे एक फ़कीर को देखा।

फ़कीर ने कहा: ''चण्ड! तू अपनी घोड़ी ढूंढ रहा है न? जा और पास बहने वाली धारा के निकट देख!'' चण्ड वहीं गया और उसकी प्रसन्नता का पारावार न रहा जब उसने ठीक उसी जगह घोड़ी को देखा जहां उस फकीर ने बताया था।



घोड़े को दुलारते साईं बाबा।

साईं बाबा का जानवरों से प्रेम

साईं बाबा जानवरों से बहुत प्रेम करते थे। वे जानवरों की देखभाल करते थे तथा कुछ समय उन्होंने जानवरों के साथ भी बिताया।

चण्ड को चमत्कार-दर्शन

चण्ड बेहद खुश था। पर उसे ताज्जुब भी था कि कैसे उस फकीर को उसका नाम मालूम पड़ा और कैसे उसने घोड़ी के बारे में बिल्कुल सही बताया। चण्ड को लगा कि वह फकीर कोई पहुंचा हुआ महान संत है। वह फकीर के पास धन्यवाद देने को पहुंचा तथा उससे पूछा कि यह सबकुछ उसको कैसे मालूम हुआ। वह फकीर कुछ भी नहीं बोला, सिर्फ मुस्कुरा दिया। उसने चण्ड से कहा कि वह उसके साथ बैठकर एक चिलम पी ले। पर चिलम तैयार करने के लिए आग और पानी की दरकार थी। उस फकीर ने अपना चिमटा ज़मीन में मारा और आग प्रकट हो गयी। ऐसे ही उसने पानी पैदा किया। आग लेकर चण्ड ने चिलम सुलगाई और पानी में अपनी तौलिया भिगो दी। फिर उन दोनों ने चिलम पी। चण्ड पाटिल के मन का अब तक सारा तनाव दूर हो चुका था। उसकी समझ में आ गया था कि यह फकीर कोई असाधारण आदमी है जिसके पास बड़ी चमत्कारी ताकतें हैं। उस स्थान से जाने से पूर्व चण्ड पाटिल ने उस फकीर को उसके गांव में होने वाली एक शादी के जश्न में आने का न्यौता दिया। पाटिल के साले के लड़के की शादी शिरडी की एक लड़की से होनी थी।



साईं बाबा और चंड चिलम के साथ।

उस फ़कीर का नाम ‘साईं’ पड़ा

वह फ़कीर उस शादी में भाग लेने के लिए चण्ड पाटिल के घर पहुंचा और बारात शिरडी के लिए चलने लगी। काफी चलने के बाद वे लोग शिरडी पहुंचे। वहां पहुंचकर शिरडी के खण्डोक्ष मंदिर में विश्राम किया। वह फ़कीर उस मंदिर के अंदर जाने लगा। जब वह मंदिर के बरगद के नीचे पहुंचा तो महान सपाती ने उसे पहचान लिया। महान सपाती खण्डोक्ष मंदिर का पुजारी था। उसने पहचान लिया कि यह फ़कीर वही युवा योगी है जो सालभर पहले नीम के पेड़ के नीचे समाधि लगाया करता था। महान सपाति ने उसका

स्वागत किया - ‘‘आओ साईं !’’ वह सन् 1858 का एक ऐतिहासिक क्षण था जब उस फ़कीर को ‘साईं’ नाम मिला। तब से वह साईं बाबा के नाम से जाना जाने लगा।



साईं बाबा खण्डोक्ष और अपनी पत्नियों के साथ।

खण्डोक्ष के बारे में

महाराष्ट्र क्षेत्र में खण्डोक्ष भगवान शिव का अवतार माना जाता है। खण्डोक्ष के दो

पत्नियां थीं, म्हाससा और बाना। म्हाससा देवी पार्वती की अवतार मानी जाती है। महाराष्ट्र के खण्डोक्ष भक्तों के लिए 'जूसी' बड़ा तीर्थ है जो शिरडी से लगभग 150 कि.मी. दूर स्थित है। महाराष्ट्र के कई गांवों में खण्डोक्ष के मंदिर मिल जाएंगे। शिरडी में स्थित उस खण्डोक्ष मंदिर के पुजारी थे म्हाल सपाती। साईं बाबा के वहां पहुंचने पर महान सपाती की उससे काफी घनिष्टता हो गई थी। म्हान सपाती उन्हें 'साईं' कहता था जबकि सारा शिरडी गांव उन्हें 'साईं बाबा' कहने लगा था। साईं का अर्थ होता है 'विश्व का स्वामी' और 'बाबा' बुजुर्गों के लिए सम्मानसूचक शब्द है। अतः साईं बाबा का शाब्दिक अर्थ हुआ: ''विश्व का स्वामी जो सबके लिए पिता समान है।''

साईं बाबा के जीवन की कई चमत्कारपूर्ण घटनाएं इसी खण्डोक्ष मंदिर से जुड़ी हैं जो आगे बताई जाएंगी।

खण्डोक्ष का संदेश

एक दिन शिरडी गांव के एक आदमी पर खण्डोक्ष का बड़ा प्रभाव पड़ा। कहा जाता है कि कुछ क्षणों के लिए खण्डोक्ष की आत्मा उस आदमी में प्रवेश कर गई थी। लोगों की उत्सुकता तो थी ही साईं बाबा की जाति, धर्म और जन्म स्थल के बारे में जानने की, सो उन्होंने खण्डोक्ष के प्रभाव में पड़े उस व्यक्ति से साईं बाबा के बारे में पूछा। उसने कहा- ''जाकर नीम के नीचे की जमीन खोदो- लेन्डी बाग के नीम की!'' गांव वालों ने ऐसा ही किया। काफी मेहनत के बाद उन्हें पेड़ के नीचे एक कब्र मिली। कब्र के चारों कोनों पर चार दीपक जल रहे थे। तब तक साईं बाबा भी वहां पहुंच गए और बोले- ''इस कब्र को ढक दो।'' लोगों ने ऐसा ही किया। उन्हीं दीपकों की आग से साईं बाबा ने अपनी धूनी सुलगाई जो लेन्डी बाग के पास द्वारका माई की माचिस से जली थी।

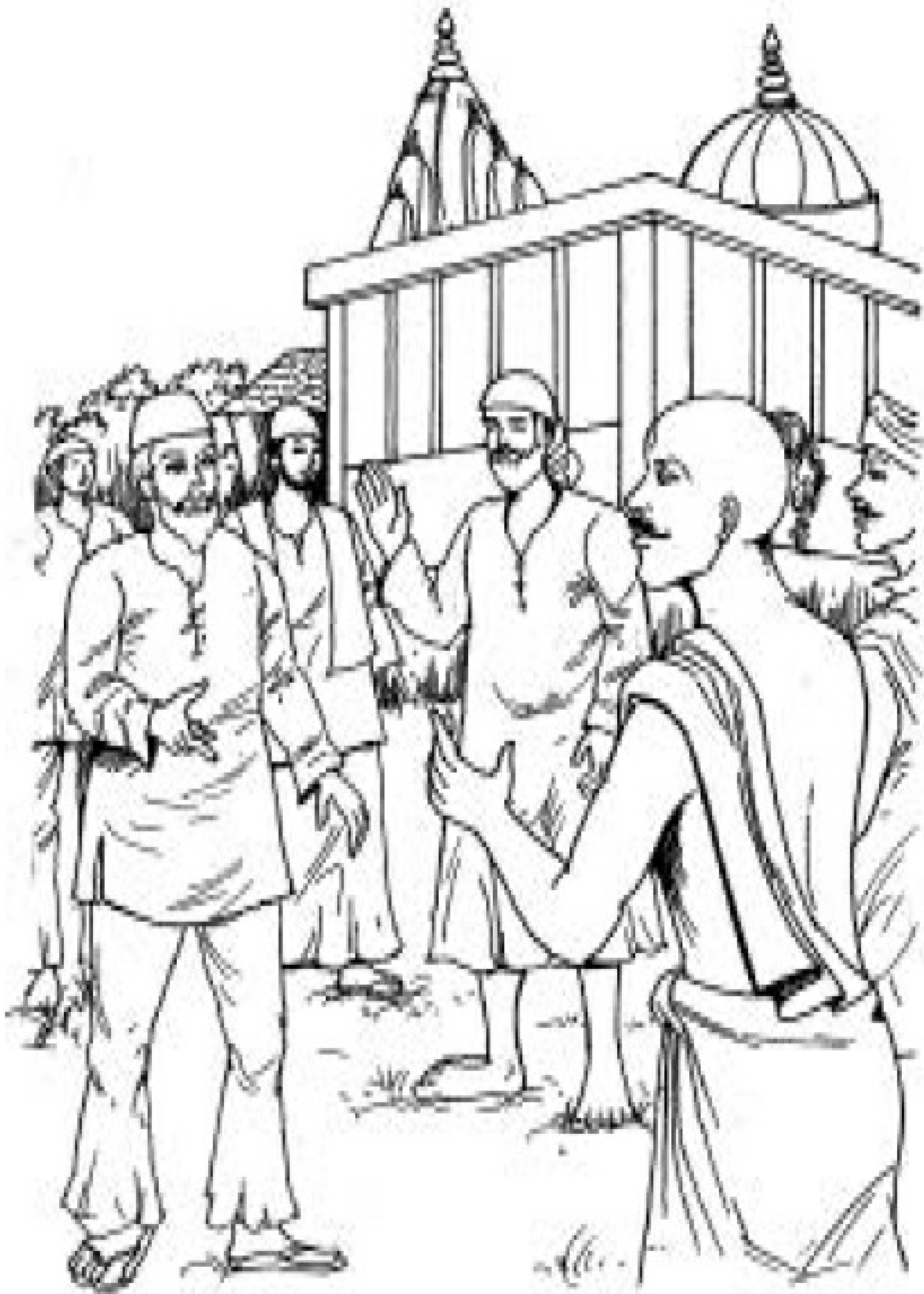
द्वारका माई: बाबा का निवास स्थल



बाबा का निवास स्थल

लेन्डी बाग के पास एक मस्जिद थी जो बहुत जीर्ण-शीर्ण हालत में थी। साईं बाबा के शिरडी आगमन के पूर्व वहां के हिन्दुओं ने उस मस्जिद को बनवाया था। पर वहां मुसलमान लोग नमाज़ नहीं पढ़ते थे। साईं बाबा ने वहीं अपना निवास स्थल बनाया। परंतु जब साईं बाबा वहां रहने लगे तो मस्जिद पर हक के लिए हिन्दू-मुसलमानों में झगड़ा होने लगा। साईं बाबा ने दोनों को ही अनुमति दी: हिन्दुओं को वहां भजन इत्यादि गाने की और मुसलमानों को नमाज़ पढ़ने की। जब मुसलमान वहां पूरी तन्मयता से नमाज़ पढ़ते थे तो

उनको वहां की हर जगह मंदिर जैसी नजर आती थी और जब हिन्दू वहां भजन गाते थे तो उन्हें वह जगह हर तरह से मस्जिद लगती थी। यह चमत्कार दिखाकर साईं बाबा एक संदेश देते थे- ''ईश्वर किसी खास जगह नहीं सीमित रहता। वह तो सबका मालिक है और हम सबका मालिक एक ही है!'' उन्होंने उस मस्जिद को द्वारका माई कहना प्रारंभ कर दिया। द्वारिका तो भगवान कृष्ण का बसाया एक प्राचीन नगर था। द्वारका का अर्थ है यहां सब जाति व धर्म के लोग रह सकते हैं। 'माई' का अर्थ 'मां' होता है। अतः द्वारका माई का अर्थ हुआ 'जहां सबको शरण मिलती है और मां का प्यार भी मिलता है!''



हिंदु और मुसलमानों का झगड़ा शान्त करते हुए साईं बाबा।

बाबाः सबके मददगार

शुरू-शुरू में सिवाय ब्याजा माई और कहल सपाति के बाबा शिरडी और किसी व्यक्ति से मिलते नहीं थे पर शीघ्र ही द्वारका माई में कई लोग आने लगे। एक बालिका, लक्ष्मीबाई शिण्डे भी बाबा की भक्त थी। एक दिन जब उसके पिता बहुत बीमार हुए तो गांव के एक

नीम-हकीम ने उन्हें दवाई देने से इंकार कर दिया। अंततः वह बालिका द्वारका माई आई। उसने बाबा से मदद की प्रार्थना की। बाबा उसके पिता को देखने गए और जैसे ही उस बीमार के शरीर को उन्होंने छुआ वह भला चंगा होकर उठ बैठा। उसके बाद से तो लोग अपनी हर छोटी-बड़ी समस्या लेकर द्वारका माई आने लगे। ब्याजा माई का पुत्र तात्या कोटे पाटिल भी साईं बाबा के घनिष्ट संपर्क में आ गया। बाबा ने उसे भी बड़ा स्नेह दिया। तात्या तो द्वारका माई में ही सोने भी लगा। अब महान सपाति और तात्या भी अपनी रात द्वारका माई में ही गुजारते थे। बाबा तो सभी प्राणियों पर सदैव दयालु रहते थे।



साईं बाबा की उपासना करती स्त्री।

बाबा की धूनी

वह धूनी जो सन् 1858 में पहली बार द्वारका माई में जली थी आज भी लगातार सुलग रही है। इससे निकलने वाली राख (उदी) वहां लोगों को उनकी मानसिक और शारीरिक व्याधियां ठीक करने हेतु देते रहते थे। आज भी इस उदी को माथे पर मलने से लोग स्वस्थ

और चंगे हो जाते हैं तथा अपनी समस्याओं से निजात पा जाते हैं। बाबा अपनी धूनी को 'धूनी माई' कहते थे। वे सदा भोर से ही इस धूनी के सामने बैठ जाते थे। साईं बाबा के सारे भक्त आज भी इस धूनी माई की बड़ी इज्जत करते हैं और उसे बड़ी श्रद्धा से अपने घर ले जाते हैं। इस चमत्कारी धूनी के साथ कई कथाएं जुड़ी हैं। एक बार साईं बाबा की एक भक्त मैना ताई को अपने बच्चे के प्रसव के दौरान बड़ी तकलीफ हुई। ऐसा लगा कि शायद वह बच ही नहीं पाएगी। पर जैसे ही उसने बाबा की 'उदी' प्राप्त की कि उसने सफलतापूर्वक एक लड़के का प्रसव किया। ऐसे ही एक बार तात्या बिल्कुल मरने ही वाला था कि बाबा ने अपनी उदी उसके माथे पर लगाई.... वह तुरंत भला-चंगा हो गया। इस प्रकार बाबा ने उसके प्राण बचाए।



बीमार को ठीक करते साईं बाबा।

पानी से दीप जलाना

बाबा को द्वारका माई में दीप जलाना बहुत अच्छा लगता था। उसके लिए तेल वह शिरडी के दुकानदारों से मांग लिया करते थे। प्रारंभ में लोगों को वहां से यह दैवी कृत्य समझ में भी नहीं आते थे इसलिए वे इसका विरोध भी करते थे।



गरीबों की मदद करते साईं बाबा।

एक बार हमेशा की तरह साईं बाबा दिवाली से एक दिन पहले दुकानदारों से तेल मांगने गए। कुछ दुष्ट प्रवृत्ति के लोगों ने दुकानदारों को बाबा के विरुद्ध भड़का दिया और

उन्होंने तय किया कि वे बाबा को इस बार तेल नहीं देंगे। उस दिन बाबा को वाकई एक बूंद तेल भी प्राप्त नहीं हो सका। पर बिना किसी के लिए मन में द्वेष का भाव लिए बाबा द्वारका माई पहुंचे जहां बाबा के साथ दिवाली का उत्सव मनाने को कई बच्चे इकट्ठे हो चुके थे। पर दीपों में तेल तो था ही नहीं। बाबा से बच्चों का उदास चेहरा नहीं देखा गया। उन्होंने तेल के बर्तन में ही पानी भरा और उस पानी को सारे दीपों में भर दिया और जब भगवान का नाम लेकर उन दीपों को जलाया गया तो सारे दीये पानी से ही जलने लगे। शिरडी के लोग तो भौंचक्के रह गए। वे दीये सारी रात जले। यह साईं बाबा द्वारा दिखाए चमत्कारों की शुरुआत थी।

लोगों को तूफान से बचाना

एक दिन शिरडी के इलाके में भयंकर तूफान आया- कच्चे घर गिरने लगे, छतें उड़ गईं। इस भयानक तूफान को रोकने का कोई जरिया न था। अंततः लोगों ने साईं बाबा से प्रार्थना की कि इस विपत्ति से बचाएं। बाबा अपने भक्तों के हर सुख-दुःख में शामिल होते थे। वे द्वारका माई से बाहर आए और आकाश की ओर देखकर कहा: ‘‘रुक जाओ! लोगों को परेशान न करो। ये मेरे भक्त हैं....! मेरा कहा मानो!’’ साईं बाबा के यह कहते ही तूफान तुरंत शांत हो गया। शिरडी के लोगों की जान में जान आई। शीघ्र ही साधारण रूप से हवा बहने लगी- लोगों को चैन मिला। तब लोगों की समझ में अच्छी तरह आ गया कि साईं बाबा का प्रकृति के पांचों मूल तत्वों पर भी पूरा नियंत्रण है। ये पांच तत्व हैं: आग, पानी, हवा, पृथ्वी और आकाश। पर बाबा अपनी ये चमत्कारी शक्तियां लोगों को यूं ही दिखाना नहीं चाहते थे। वे तो उनका तब ही प्रयोग करते थे जब असहाय जनों को विपदा से बचाना होता था।

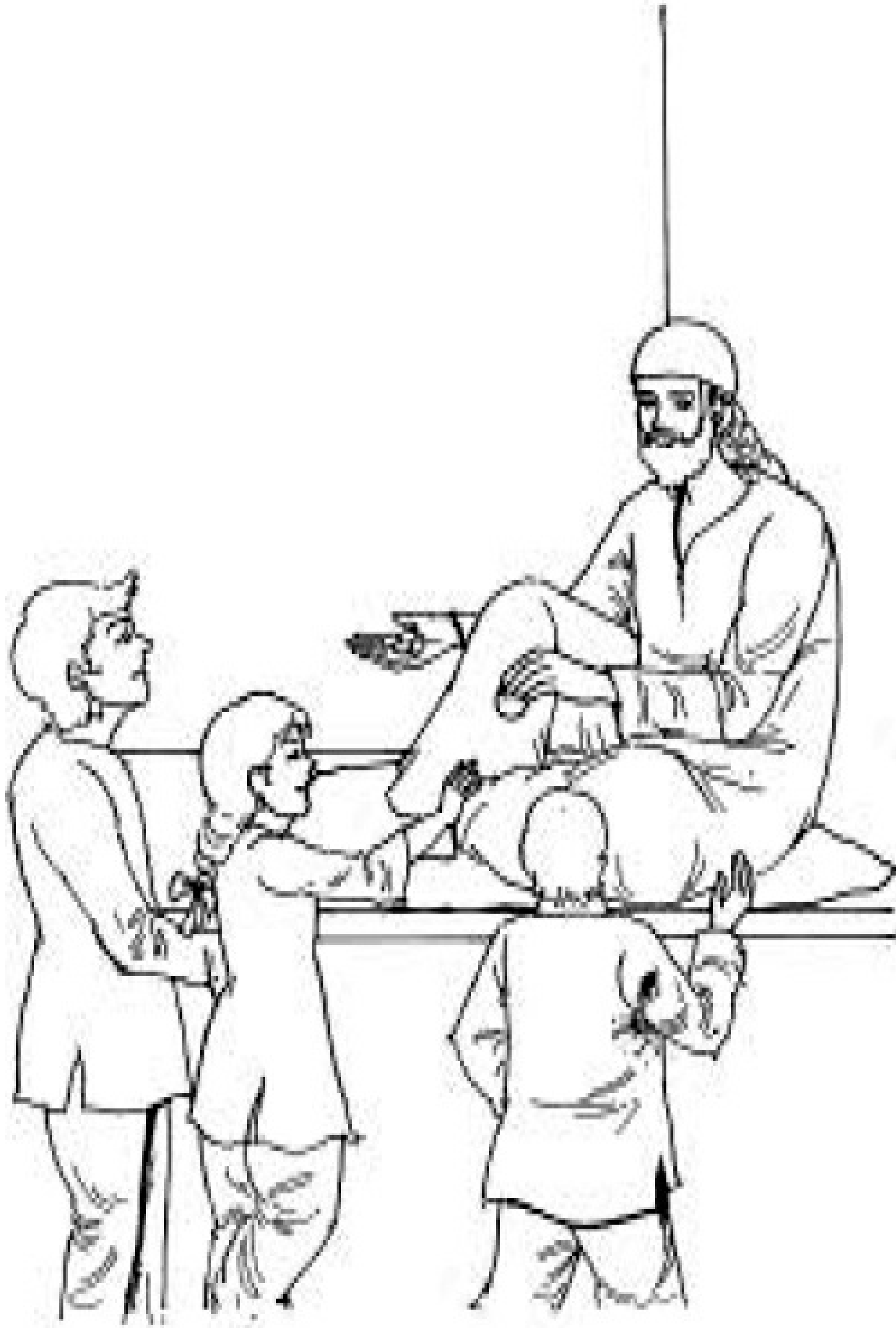
शमा बाबा के घनिष्ट हुए

शिरडी में एक युवा शिक्षक थे, नाम था माधव देशपाण्डे। इनके मां-बाप सन् 1850 में शिरडी में आए थे। इसके पूर्व वे पास ही के एक गांव में रहते थे। माधव देशपाण्डे गांव के प्राथमिक विद्यालय में पढ़ाते थे जो वहां स्थित था, जहां अब श्याम सुंदर कक्ष स्थित है। श्याम सुंदर नाम था बाबा के घोड़े का। शुरू में देशपाण्डे की बाबा से मिलने की कोई चाह नहीं थी। पर जब उन्होंने कई महीनों तक बाबा के दैवी कृत्य देखे तो वे उनके संपर्क में आए। प्रथम मुलाकात में ही बाबा ने उन्हें बताया कि वह पिछले 72 जन्मों से बाबा के घनिष्ट रहे हैं। बाबा स्नेह से उनको ‘शमा’ कहकर पुकारते थे। शमा भी बाबा को अपना गुरु और प्रभु समझने लगे थे। वह बाबा के घनिष्टों में से एक थे। जब कभी शमा किसी पर या बाबा पर भी अपना क्रोध दिखाते थे तो बाबा मंद-मंद मुस्कुराते रहते थे।

बच्चों को चांदी के सिक्के देना

बाबा इतने सीधे-सरल थे कि गांव के बच्चे भी उनके साथ खूब खेलते थे। तात्या तो प्रायः उनके कंधों पर भी चढ़ जाता था। सारे बच्चे बाबा को अपना दोस्त समझते थे- उनमें से प्रमुख थे तात्या, बापा जी कोटे पाटिल और लक्ष्मीबाई शिण्डे। बाबा स्वरूप भी तात्या

की मां बाबा जी को ‘बायाणी बाई मां’ ही कहते थे। विवाह के पूर्व तात्या द्वारका माई में ही सोता था- वस्तुतः तात्या, महान सपाती और बाबा, तीनों ही रात्रि में द्वारका माई में ही रहते थे। बाबा तात्या को तांबे व चांदी के सिक्के देते थे। तात्या ने इनका सही इस्तेमाल किया और शिरडी में ही कई एकड़ जमीन खरीद ली। इसी प्रकार बाबा बापाजी कोटे पाटिल को रोज तीन चांदी के सिक्के देते थे।



बच्चों को चांदी के सिक्के देते हुए बाबा।

बच्चों को यह धन देते हुए बाबा उन्हें सचेत कर देते थे कि कोई भी इनका प्रयोग गलत कामों में नहीं करेगा और सही उपयोग करेगा। इस प्रकार बाबा शुरू से बच्चों को धन का महत्त्व बताते थे और उसका सही इस्तेमाल करना सिखाते थे। इसी धन के सहारे बापाजी ने 82 एकड़ जमीन शिरडी और आस-पास के इलाकों में खरीद ली थी। बाबा ने मरने से पूर्व लक्ष्मी बाई शिंडे को नौ ऐसे सिक्के दिए थे।

लोगों से धन स्वीकार करना

बाबा को अपनी जरूरतों के लिए तो धन की दरकार थी ही नहीं। वे बेहद सादा जीवन बिताते थे। वह द्वारका माई से निकलकर रोज पांच घरों से भिक्षा मांगते थे और जो कुछ भी मिलता था वह उसे द्वारका माई में रखे एक मिट्टी के बर्तन में रख देते थे और सबसे आखिर में वह भोजन ग्रहण करते थे। बाबा अपने भक्तों से धन स्वीकार करते थे पर अपने पास कुछ भी जमा करके नहीं रखते थे। उसी दिन वह सब प्राप्त धन बांट देते थे। लोगों की समझ में नहीं आता था कि बाबा दान-दक्षिणा स्वीकार ही क्यों करते हैं। बाबा ने यह स्पष्ट भी किया था।

उनका कहना था कि व्यक्तिगत रूप से तो उन्हें कुछ भी नहीं चाहिए था- पर उस प्राप्त दान-दक्षिणा से वह लोगों का दुःख और दाद्रिय दूर करने का प्रयास करते थे। एक बार उन्होंने महान सपाती को भी कुछ धन देने की कोशिश की थी पर उसने सादर मना कर दिया था। वह कहता कि उसे तो बाबा की केवल भक्ति चाहिए। बाबा कई जरूरतमंद लोगों की सहायता करते रहते थे। वे कभी भी अपने लिए कोई रुपया-पैसा बचा के नहीं रखते थे।

शिरडी को एक नग मिला

पुणताको महाराष्ट्र में एक प्रसिद्ध संत थे। उनका नाम था गंगागीर। वह पण्ध्रपुर हर साल जाते थे। वह भगवान कृष्ण के बड़े भक्त थे। वे शिरडी होते हुए ही जाया करते थे।

अपनी इस तीर्थ यात्रा के दौरान वे कुछ समय शिरडी में भी बिताते थे। भगवान कृष्ण पण्धरपुर में विढोवा या विट्ठल के नाम से पूजे जाते हैं। पण्धरपुर को दक्षिणी भारत का द्वारिका भी कहा जाता है। एक बार उन्होंने देखा कि साईं बाबा लेण्डीबाग में पौधों को पानी दे रहे हैं। बाबा को बाग-बगीचों का बहुत शौक था। वह शिरडी से पांच किलोमीटर दूर राहता से भी पौधे लेकर आते थे।



पौधों को पानी देते साईं बाबा।

जब गंगागीर ने पहली बार बाबा को पानी देते देखा तो उन्होंने बाबा को पहचान लिया। वह समझ गए कि बाबा के रूप में स्वयं सर्वशक्तिशाली भगवान वहां उपस्थित हैं। उनकी पहली टिप्पणी थीः ''शिरडी को एक नग मिल गया है। यह साईंनाथ कोई और नहीं वरन् स्वयं पण्धरीनाथ (भगवान कृष्ण) हैं।'' इस कारण से वह जब तक जीवित रहे हर

साल शिरडी में बाबा के दर्शन के लिए आते रहते थे।

एक विश्वात्मा

बाबा का कहना था: ''सब जीवों में एक ही विश्वात्मा का निवास होता है।'' इसके लिए उन्होंने कई व्यावहारिक उदाहरण भी दिए थे। एक बार - एक धार्मिक स्वभाव की महिला शिरडी में द्वारका माई पहुंची, बाबा के लिए मीठा दलिया लेकर। बाबा ने उनको देखकर कहा: ''अरे मां! तू तो मेरे लिए बड़ा स्वादिष्ट भोजन लाई है। दलिए में कितने तो सूखे मेवे पड़े हुए हैं। मुझे तो मजा आ गया।'' वह महिला थोड़ा विस्मित हो गई। वह सोचने लगी: ''मैं तो अभी द्वारका माई में घुसी ही हूं और बाबा को अभी एक चम्मच दलिया भी नहीं दिया है। तो बाबा कैसे कह रहे हैं कि दलिया बेहद स्वादिष्ट है!'' बाबा उस महिला का विस्मय समझ गए और उसके शक का निवारण करते हुए बोले- ''हे माता! तू याद कर ... जब तू दलिया बना रही थी, तब तेरे द्वार पर एक बैल आया था और तूने उसे थोड़ा सा दलिया दिया था खाने को। वह बैल कोई और नहीं तेरे साईं बाबा ही थे!'' वह महिला बेहद आश्चर्य में पड़ गई। इस प्रकार बाबा अपना महान संदेश फैलाते थे: ''सब जीवों में एक ही विश्वात्मा का निवास होता है।''



लक्ष्मीबाई सिंडै की मां बाबा को भोजन देते हुए।

बाबा ने एक कुत्ते का रूप धरा

एक बार बाबा ने लक्ष्मीबाई शिण्डे की मां को हुक्म दिया कि वह उनके लिए एक रोटी लेकर आए। उन्होंने उससे कहा कि उन्हें बड़ी भूख लगी है। वह तुरंत द्वारका माई से गई और बाबा के लिए तुरंत रोटी व चटनी लेकर आई। बाबा ने वह भोजन द्वारका माई के

सामने बैठे एक कुत्ते को खिला दिया। इस पर लक्ष्मी की मां बिगड़ कर बोलीः ''यह तुमने क्या किया बाबा? मैंने यह रोटी बड़े प्यार से बनाई थी और तुमने यह एक कुत्ते को खिला दी।'' बाबा मुस्कुरा कर बोलेः ''अरे लक्ष्मी की मां! मैं भला कभी तेरी भेंट अस्वीकार कर सकता हूं? क्या मैं तेरी भक्ति का निरादर कर सकता हूं? अरे पगली! वह कुत्ता तो मैं स्वयं ही था।'' बाबा के उत्तर से वह संतुष्ट हो गई। ऐसा कई बार हुआ जब बाबा अपनी बात समझाने के लिए कुत्ते का रूप धारण कर अपने भक्तों की सहायता करते थे। एक बार महाम सपाती को भी यही अनुभव हुआ था जब वह जेज्यूरी में अपनी तीर्थयात्रा के दौरान पहुंचे थे।

महान सपाती की सहायता

एक बार बाबा के भक्त महान सपाती महाराष्ट्र में खण्डोबा के एक तीर्थ स्थल जेज्यूरी पहुंचे। उनके साथ शिरडी के कई लोग थे। उसी यात्रा के दौरान एक बार जंगल में उनके पीछे कुछ डकैत पड़ गए। तीर्थ यात्रियों ने तुरंत खतरा भांप लिया और मन ही मन साईं बाबा से प्रार्थना करने लगे। तुरंत उन्हें एक कुत्ता दिखाई पड़ा। कुत्ता दूसरी तरफ चलने लगा- यह समझकर कि कुत्ता उन्हें गांव की तरफ ले जा रहा है, वे सब कुत्ते के पीछे चलने लगे। वह रास्ता कठिन था जबकि डकैत आसान मार्ग से आ रहे थे। डकैतों को ताज्जुब हुआ कि यह सीधे-सादे लोग इतना कठिन रास्ता कैसे पार करेंगे। पर जब वे पास के गांव पहुंचे तो रात हो चुकी थी।

गांव वालों को भी ताज्जुब हुआ कि इस समय ये लोग यहां कैसे पहुंचे क्योंकि उन्हें मालूम था कि यह इलाका डाकुओं से आक्रांत था। उन लोगों ने शिरडी के लोगों को बताया कि यहां गांव में एक फकीर सुबह से ही घूम रहा था। उस फकीर के साथ एक कुत्ता भी था। तब शिरडी के लोगों की समझ में आ गया कि वह कुत्ता कोई और नहीं साईं बाबा स्वयं ही थे। वे सब जेज्यूरी सकुशल पहुंच गए।

एक तपेदिक के मरीज की सहायता

बाबा का मानव-अवतार सबकी पीड़ा और कष्ट के निवारण के लिए ही हुआ था। महाराष्ट्र के कोने-कोने में बाबा की चमत्कारी शक्तियों की ख्याति पहुंच चुकी थी। उनके जीवनकाल में ही भारत में भी वह प्रख्यात हो चुके थे। लोग द्वारका माई में आते रहते थे अपने दुखों के निवारण के लिए और सुखों का आनंद लेने को भी। इन्हीं में एक थे भीमाजी जो तपेदिक या टी.बी. के मरीज थे। उन्नीसवी शताब्दी में टी.बी. एक असाधारण रोग माना जाता था। भीमाजी को डाक्टरों ने जवाब दे दिया था- कह दिया था कि उनके बचने की कोई उम्मीद नहीं है। लाचार होकर भीमाजी अपनी पत्नी के साथ बाबा जी की शरण में आए थे। बाबा ने उन्हें ठीक होने का आशीर्वाद दिया। कुछ समय बाद बाबा की कृपा से वह रोगमुक्त हो गए। वह बाबा के बहुत कृतज्ञ थे। बाबा के प्रति अपना सम्मान दिखाने के लिए उन्होंने ''साईं सत्यव्रत कथा'' का आयोजन कराना प्रारंभ किया। तब से यह कथा अनवरत रूप से शिरडी में आयोजित होती रही है। बाबा ने एक बार कहा थाः ''जो साईं सत्यव्रत कथा का आयोजन करेंगे वे अपनी सभी भौतिक और मनोवैज्ञानिक समस्याओं से मुक्ति पा

सकते हैं।”

स्त्री को मुश्किल से निकाला साईं बाबा ने

बाबा बहुत दयालु थे वे किसी का भी दुःख नहीं देख सकते थे। एक समय एक स्त्री अपने पति की बीमारी से बहुत दुखी थी। सभी डॉक्टरों को दिखा चुकी थी पर सभी ने मना कर दिया था। अंत में वह साईं बाबा की शरण में आई और साईं बाबा ने उसके समस्त कष्ट दूर कर दिए।

तीव्र दिन की समाधि



बाबा की सेवा करता हुआ भक्त।

एक बार सन् 1866 के जाड़ों में बाबा ने महान सपाती से कहा था कि वह योग-क्रिया द्वारा अपने जीवन का अंत करना चाहते हैं। इसी योग-क्रिया का एक अंग समाधि होता है। उन्होंने महान सपाती से कहाः ''मैं अब दूसरी दुनिया में जा रहा हूं। मेरे शरीर का तीन दिनों तक पूर्ण संरक्षण करना। यदि तीन दिन बाद मैं लौटकर न आऊं तो फिर मेरे शरीर का दाह-क्रिया कर देना द्वारका माई के एक कोने में और मेरी समाधि पर दो झण्डे गाड़ देना, एक हिन्दुओं के लिए और दूसरा मुसलमानों के लिए- वैसे मैं कोई जाति-धर्म इत्यादि

का भेदभाव नहीं मानता हूं।'' यह कहकर बाबा समाधि में चले गए अपना भौतिक शरीर वहीं छोड़कर। महान सपाती तो जोर-जोर से रोने लगा। शीघ्र ही साईंनाथ की मृत्यु की खबर चारों ओर फैल गई। आस-पास के गांवों से लोग वहां जुड़ने लगे। डाक्टरों ने भी साईं बाबा को मृत घोषित कर दिया। जब यह खबर स्थानीय सरकारी लोगों तक पहुंची तो वे भी वहां आए। वे जिद करने लगे कि बाबा की तुरंत ही अंत्येष्टि की जाए।



स्त्री की मदद करते बाबा।

पर महान सपाती ने इसका विरोध किया और बाबा के शरीर की रक्षा करने लगा। तीन दिन पश्चात् बाबा के शरीर की सांस फिर चलने लगी और शीघ्र ही बाबा जीते-जागते, लोगों की भारी भीड़ के सामने खड़े हो गए। सब अभिभूत होकर चिल्लाने लगेः ''साईं बाबा की जय।'' मानव इतिहास में यह एक अनोखी घटना थी। इस घटना के पश्चात् बाबा 32 वर्षों तक शिरडी में और रहे थे।

प्रसिद्ध व्यक्तियों का शिरडी में आना शुरू

तीन दिन की समाधि के बाद बाबा का जीता-जागता उठ बैठना एक चमत्कारी घटना थी। लोग हर क्षेत्र से शिरडी में आने लगे। एक दिन नाण्देड़ के फकीर अभीरूद्दीन को एक सपना आया। उसे लगा कि साईं बाबा उससे कह रहे हैं: ''अभीरूद्दीन! अपने चेले अब्दुल को तो मेरे पास शिरडी में भेज। उसके साथ दो आग के टुकड़े भी भेजना!'' और जब अभीरूद्दीन सोकर उठा तो उसके बिस्तर के पास आग के दो टुकड़े पड़े थे। वह भौंचक्का रह गया। उसने तुरंत अब्दुल को शिरडी भेजा। उधर, अब्दुल के वहां पहुंचने से पूर्व बाबा कहने लगेः ''आज मेरा कागा (कौआ) आएगा।'' अब्दुल के बाप का नाम था सुल्तान जो नाण्देड़ का रहने वाला था। लेकिन फिर वह शिरडी आ गया और मरते दम तक वहीं रहा। उसने साईं बाबा की पूरी भक्ति-भाव से सेवा की। उसकी मृत्यु 1954 में हुई। शिरडी के साईं मंदिर परिसर में ही अब्दुल की समाधि है। इसके बाद तो शिरडी में प्रसिद्ध लोगों का तांता लग गया। जो लोग बाबा के संपर्क में आए उनमें प्रमुख हैं: नाना साहब चण्डोरकर, गोपालराव बूटी, सॉलिसिटर एच.एस. दीक्षित, श्री साथे, ज्योतिंद्र तरखड़, श्री कापर्डे (ऑफ शिरडी ऊपरी) इत्यादि।



बाबा की भक्ति में तल्लीन भक्त।

नाना साहब चण्डोरकर का आना

नाना साहब चण्डोरकर अहमदनगर के हवलदार थे। एक बार वह सरकारी काम के लिए कोपर गांव पहुंचे जहां शिरडी के अप्पा कुलकर्णी को उन्हें रिपोर्ट करना था। शिरडी में तब एक परंपरा कायम हो चुकी थी कि वहां का कोई आदमी जब कहीं बाहर जाता तो

पहले वह द्वारका माई में आकर साईं बाबा से अनुमति और आशीर्वाद प्राप्त करता था। तो बाहर जाने के पूर्व अप्पा कुलकर्णी बाबा के पास पहुंचे तो बाबा ने उनसे नाना को उनका शिरडी आने का निमंत्रण देने को कहा। अप्पा की समझ में ही नहीं आया कि बाबा नाना साहब को कैसे जानते थे। लेकिन उनको याद आया कि साईं बाबा तो अंतर्यामी हैं। अप्पा कोपर गांव गए और नाना साहब को साईं बाबा का संदेश दिया। शुरू में तो नाना साहब ने इस निमंत्रण पर कोई ध्यान नहीं दिया। परंतु एक बार और साईं बाबा ने नाना साहब को यही संदेश भिजवाया। अब नाना साहब की समझ में आया कि इस न्यौते के पीछे जरूर कोई कारण होगा। वह द्वारका माई पहुंचे। जब बाबा ने उन्हें देखा तो स्नेहातिरेक में वे बोलेः ''अरे नाना! आ! तू तो चार जन्मों से मेरा मित्र रहा है। इस बात को मैं ही जानता हूं, तू नहीं।''

मैना ताई के विवाह में प्रकट होना

प्रारंभिक अनिच्छा के बावजूद नाना साहब साईं बाबा के धनिष्ठ संपर्क में आते गए और शिरडी कई बार आए। फिर तो जब भी कोई समस्या उभरती वे शिरडी आकर उसका समाधान प्राप्त करते थे। वे भी सभी सुअवसरों पर सबको न्यौता दिया करते थे, इस संबंध में एक रोचक घटना इस प्रकार है- नाना साहब की सबसे बड़ी संतान, मैना ताई, साईं बाबा की बड़ी भक्त थी। अपनी शादी के पूर्व वह स्वयं साईं बाबा को निमंत्रित करने आई थी।

बाबा ने निमंत्रण स्वीकार भी कर लिया। बाबा के अन्य भक्तों को यह विश्वास ही नहीं हुआ क्योंकि बाबा पिछले 60 वर्षों से शिरडी के बाहर कभी गए ही नहीं थे। वे शिरडी में लगभग 60 वर्षों तक रहे थे। उस शादी में सारे अतिथि तो पहुंच गए थे पर बाबा का कहीं पता नहीं था। शादी के पश्चात् मैना ताई अपने पति के साथ द्वारका माई आई और उसने बाबा से शादी में न आने की शिकायत की। तब बाबा ने उसे याद दिलाया कि जब शादी में एक बिना बुलाए फकीर को सब दुत्कार रहे थे तब उसी ने उन्हें स्वादिष्ट भोजन दिया था। वह फकीर और कोई नहीं साईं बाबा स्वयं ही थे। मैना ताई बाबा के उस चमत्कारी घटना वाले बयान से पूरी तरह संतुष्ट हो गई।

बाबा एक कोचवान के रूप में

बाबा ने नाना साहब को अपनी धूनी की उदी (राख) दी थी, मैना ताई को प्रसव के समय खिलाने को। पर नाना साहब ने वह किसी अन्य जरूरतमंद इंसान को दे दी थी। उधर प्रसव के दौरान मैना ताई की हालत काफी खराब हो गई। सबको बाबा की याद आई- 'वे होते तो मैना ताई को कुछ राहत मिलती!' इसी दौरान शिरडी के रामगीर बुआ द्वारका माई पहुंचे। बाबा ने उन्हें फौरन जामनेर जाने का आदेश दिया। नाना साहब तब वहीं नियुक्त थे। रामगीर ने बाबा से कहा कि वहां जाने के लिए उसके पास पैसे नहीं हैं। बाबा ने उन्हें आश्वस्त किया कि वे उसकी सहायता करेंगे। रामगीर फौरन निकटवर्ती रेलवे स्टेशन गया। वहां उसे एक कोचवान मिला। कोचवान बोला कि वह उसे नाना साहब के घर तक छोड़ देगा। रास्ता काफी लंबा था और रामगीर के पास पैसे भी नहीं थे। इसलिए उसने

कोचवान का कहा मान लिया। जब वह नाना साहब के घर पहुंचा तो उसने नाना साहब को कोचवान भेजने के लिए बहुत धन्यवाद दिया। पर नाना साहब ने कहा कि उन्होंने तो किसी को भेजा ही नहीं था। सभी तुरंत उस कोचवान को देखने घर के बाहर दौड़े। पर घर के बाहर कोई नहीं था। सबकी समझ में आ गया कि मैना ताई की सहायता को साईं बाबा खुद ही कोचवान के रूप में वहां आए थे। रामगीर ने बाबा की उदी मैना ताई को दी और उसने आराम से एक लड़के को पैदा किया।

दसगान्

दसगान् भी साईं बाबा का बड़ा भक्त था। वह पुलिस में एक मामूली सिपाही था तथा नाना साहब की सेवा में था। वह साईं बाबा के संपर्क में नाना साहब से पहले से आ गया था। बाबा ने उससे अनुरोध किया था कि वह उनकी सेवा में ही आ जाए। पर हर बार उसने बाबा का कहा हंसी में टाल दिया। एक बार वह डकैतों के हाथ में पड़ गया- वे उसे मारना ही चाहते थे कि उसने बाबा से मन ही मन बचाव की प्रार्थना की। अचानक डकैतों का मन बदल गया। उन्होंने सोचा कि इस पुलिस वाले को मारकर उन्हें कुछ नहीं मिलने वाला! और उन्होंने दसगान् को मुक्त कर दिया। इसके बाद एक महिला ने भी झूठी शिकायत दर्ज कराई कि दसगान् ने उससे रिश्वत मांगी थी। इसकी पूरी विभागीय जांच हुई और दसगान् बेदाग छोड़ दिया गया। परंतु इसके बाद उसने पुलिस सेवा से त्यागपत्र दे दिया और बाबा की सेवा में आ गया। वह वहां नित्य भजन और बाबा के संदेश को दूर-दूर तक पहुंचाता। आज भी साईं के भक्त उसका नाम बड़ी श्रद्धा और सम्मान के साथ लेते हैं।

उपासनी महाराज

उपासनी महाराज नासिक जिले के निवासी थे। उन्हें एक आध्यात्मिक गुरु की तलाश थी। वे शिरडी आए और साईं बाबा से आशीर्वाद लेना चाहा। बाबा ने उन्हें आदेश दिया कि पहले वह खण्डोबा परिसर में निवास करें और मौन रहें। उपासनी महाराज ने ऐसा ही किया। एक दिन वह खण्डोबा परिसर में अपना भोजन पका रहे थे कि वहां एक कुत्ता आ गया। उन्होंने पत्थर मारकर उस कुत्ते को भगा दिया। भोजन बनाने के बाद वे साईं बाबा के पास आए उन्हें भोग (प्रसाद) देने के लिए। बाबा ने उस प्रसाद का एक दाना भी स्वीकार नहीं किया। उन्होंने कहा कि वह खण्डोब मंदिर में एक कुत्ते के रूप में गए थे तब तो उपासनी ने उन्हें पत्थर मारकर भगा दिया था।


मुश्किल में फसे व्यक्ति की मदद करते बाबा।

उपासनी महाराज को अब अपनी गलती का एहसास हुआ। दूसरे दिन जब वह बाबा के लिए भोजन बना रहे थे वहां एक भिखारी आ गया। उन्होंने फिर उस भिखारी को भी भगा दिया। और जब वह खाना लेकर बाबा के पास गए, बाबा ने वह खाना फिर अस्वीकार कर दिया। उपासनी जी को अब समझ में आया कि वह एक ही कार्य को बार-बार दोहरा रहे

थे। अपने इन चमत्कारी प्रभावों से बाबा अपना संदेश प्रेषित करते थे कि एक ही विश्वात्मा (ईश्वर) की सारे जीवों में उपस्थिति है। थोड़े समय बाद बाबा की कृपा और आशीर्वाद से उपासनी जी ने यह सत्य ग्रहण किया और महान संत हो गए।

राधाकृष्ण माई

राधाकृष्ण माई एक संतानहीन विधवा थी जो पण्धापुर में रहती थी। एक दिन सपने में उसने अक्कासकोटा स्वामी के दर्शन किए। इन स्वामी के लिए उसके मन में बड़ी श्रद्धा थी। उसके सपने में स्वामी जी ने उससे कहाः ''आजकल मैं शिरडी में रह रहा हूं। तू वहां जाकर मेरी आराधना कर!'' वह साईं बाबा के पास पहुंची और पूरी ऊर्जा से उनकी भक्ति में तल्लीन हो गई। एक दिन उसकी कामना हुई कि वह बाबा से गुरुमंत्र प्राप्त करे।

बाबा ने आज तक कोई गुरुमंत्र कभी किसी को नहीं दिया था। पर वह निश्चय कर चुकी थी बाबा से गुरुमंत्र लेने का। जब बाबा ने उसे मंत्र नहीं दिया तो उसने आत्महत्या करने का निर्णय करने की कोशिश की। बाबा ने उसे अपने पास बुलाकर बहुत समझायाः ''ओ माई! जब मेरे गुरु ने कभी मुझे कोई गुरुमंत्र नहीं दिया तो मैं तुझे कैसे दे दूं? मैंने भी अपने गुरु की सेवा पूरे भक्तिभाव से की थी। जब मैंने अपनी शिक्षा पूरी की तो मेरे गुरु ने मुझसे दो सिक्के मांगे।

मैंने वे दोनों सिक्के उन्हें दे दिये- वे सिक्के ये हैं: 'श्रद्धा' और 'सबूरी' (सब्र या धैर्य)।'' तबसे सब लोग इन दो शब्दों को बाबा का गुरुमंत्र मानते हैं।

एच.एस. दीक्षित

एच.एस. दीक्षित मुंबई के मशहूर वकील थे और प्रांतीय सभा के सदस्य भी थे। उनके लंदन प्रवास के दौरान एक दुर्घटना घटी थी। जिसमें वे लंगड़े हो गए थे। कई तरह के इलाज कराए गए पर उनकी वह समस्या दूर नहीं हुई। एक दिन उनके मित्र नाना साहब चंडोरकर ने उन्हें बाबा की शरण में जाकर इसका उपचार करने की सलाह दी। दीक्षित जी द्वारका माई पहुंचे। पर उन्होंने बाबा से प्रार्थना की कि बजाय उनकी शारीरिक कंपन और अस्थिरता दूर करने के वे उनकी मानसिक चंचलता को दूर करें। बाबा ने उन पर कृपा की। शीघ्र ही उनको आध्यात्मिक उत्कर्ष प्राप्त हुआ। फिर वे अपना सांसारिक जीवन छोड़कर वहीं शिरडी में रहने लगे। उन्होंने ही शिरडी साईं बाबा ट्रस्ट की स्थापना की और साईं भक्ति का बड़ा प्रचार किया।

मेघा

मेघा साईं बाबा की बड़ा भक्त था। वह श्री दीक्षित के घर में नौकर था। एक बार उसके मालिक ने उसे शिरडी भेजा। उसके मन में बड़ा ऊहापोह पैदा हुआः वह न तो अपने मालिक की अवमानना कर सकता था और न ही उसका मन किसी फकीर से मिलने को था परंतु न चाहते हुए भी वह शिरडी गया। जब वह वहां पहुंचा तो बाबा ने उसे फटकार लगाईः ''तू एक फकीर से मिलने क्यों आया?'' तब से उसकी समझ में आ गया कि बाबा

स्वयं ही उसके इष्टदेव भगवान शिव हैं। बाबा ने उसे एक शिवलिंग भी दिया। वह बाबा और शिवलिंग दोनों की पूजा करने लगा।



शरडी में हैजे का प्रकोप।

एक दिन उसने सपने में देखा कि उसने बाबा के माथे पर चंदन लगाया है। जब जागा तो उसने देखा कि वही चंदन का लेप शिवलिंग पर भी लगा है। इससे उसकी भक्ति और दृढ़ हो गई। वह शिरडी में ही रहने लगा और उसने शिरडी में ही प्राण त्यागे। उसकी मृत्यु पर

बाबा एक बच्चे की भांति बिलख-बिलख कर रोए थे। बाबा का कहना थाः ''वह एक सच्चा भक्त था।''

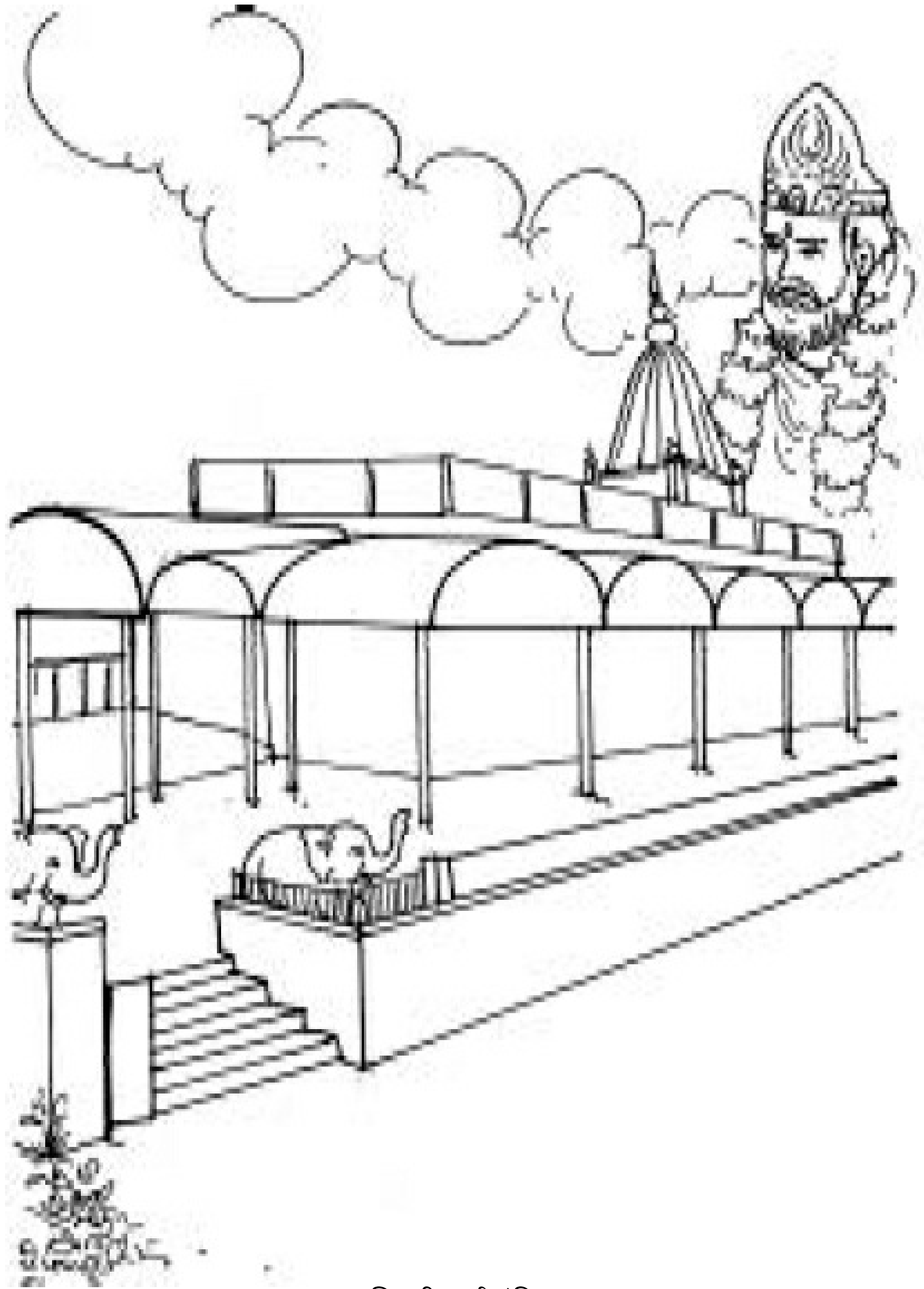
हेमद पंत और गोपाल राव बूटी

हेमद पंत नाना साहब के दोस्त थे। वे 1910 में शिरडी आए थे। जब वह शिरडी में थे तो वहां हैजे का प्रकोप फैला था। बाबा ने शिरडी के चारों ओर आटा बिछा दिया था जिससे शिरडी इस प्रकोप से बच सके। बाबा के इस कृत्य को देखकर हेमद पंत के मन में बाबा की आत्मकथा लिखने का विचार आया। शमा जी की सहायता से उन्होंने बाबा से ऐसा करने की अनुमति प्राप्त करने में भी सफलता पाई। फिर उन्होंने मराठी में एक ग्रंथ लिखा 'श्री साईं समर्थ सच्चात्रि'। बाबा के ऊपर लिखी गई यह सबसे प्रामाणिक पुस्तक मानी जाती है।



साईं मंदिर।

गोपाल राव बूटी तो नागपुर के एक महाजन थे। वे भी साईं बाबा के बड़े भक्त बन गए थे। उनको सपना आया कि वे वहां एक ऐसी इमारत बनवाएं जिसमें एक अतिथि गृह और मंदिर भी हो। संयोगवश शमा जी को भी ऐसा ही सपना आया। दोनों बाबा के पास आए अपनी-अपनी परियोजनाओं की अनुमति लेने के लिए। बाबा ने दोनों को अनुमति दे दी। जब वे इमारतें खड़ी हो गईं तब ही बाबा ने आखिरी सांस ली।



शिरडी साईं मंदिर।

अंतिम क्षण

15 अक्तूबर 1918 को दशहरा का पावन दिन था और मुसलमानों के पवित्र रमजान महीने का नौवां दिन भी। उस दिन बाबा ने लक्ष्मीबाई शिन्डे को 9 चांदी के सिक्के दिए थे। लोगों की मान्यता है वे कि 9 सिक्के 'नवध भक्ति' तथा नौ प्रकार की भक्ति के प्रतीक थे।

फिर बाबा में बायजा कोटे पाटिल की गोद में लेटे-लेटे 'ओम्' का उच्चारण किया और प्राण त्याग दिए। यह हृदय-विदारक समाचार सब जगह फैल गया।

बाबा कह गए थे कि भौतिक शरीर के बगैर भी वह सदा अपने भक्तों की सहायता करते रहेंगे। बाबा की इच्छा के अनुसार उनकी अंत्येष्टि बूटी के बनाए मंदिर एवं अतिथिगृह के परिसर में हुई। अब इसे 'समाधि मंदिर' कहते हैं।

आज हजारों लोग शिरडी आते हैं बाबा का आशीर्वाद और कृपा लेने के लिए, वे विभिन्न धर्म-जाति व संप्रदाय के होते हैं। बाबा के यहां किसी प्रकार का कोई भेदभाव नहीं होता। इस प्रकार बाबा 60 वर्ष तक शिरडी में रहे और सबके कष्ट दूर करते रहे।

ओम् साईं, श्री साईं, जय-जय साईं!

